
आलस्य और अलबेलापन - 50

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » अभी स्वयं को स्नेह के साथ शक्तिशाली बनाओ। स्वयं के परिवर्तन में शक्तिरूप बनो। सहज योगी, सहज योगी करके अलबेलापन नहीं लाओ। बापदादा देखते हैं कि स्व प्रति, चाहे सेवा प्रति, चाहे औरों के सम्बन्ध-सम्पर्क प्रति अलबेलापन ज्यादा आ गया है। ऐसे नहीं सोचो कि सब चलता है। एक-दो को काँपी नहीं करो, बाप को काँपी करो। दूसरों को देखने की आदत थोड़ी ज्यादा हो गई है। अपने को देखने में अलबेलापन आ गया है।

» _ » बापदादा ने सुनाया था ना कि नजदीक की नज़र कमजोर हो गई है और दूर की नज़र तेज हो गई है। तो अभी क्या करेंगे? सीज़न का फल क्या देंगे? कि सिर्फ बाप आया, मिला, मनाया, मुरली सुनी-ये फल है? हर सीज़न का फल होता है ना? तो इस सीज़न का फल बापदादा को क्या भोग लगायेंगे? भोग लगाते हो तो फल भी रखते हो ना? वो तो बाजार में मिल जाता है, कोई बड़ी बात नहीं।

» _ » अब इस सीज़न का फल क्या भेंट करेंगे या भोग लगायेंगे? लगाना है या मुश्किल है? तो देखेंगे कि नम्बरवन भोग कहाँ से आता है। वायदा तो बहुत अच्छा करके जाते हो, कभी भी ना नहीं करते हो, हाँ ही करते हो! खुश कर देते हो। लेकिन अभी क्या करेंगे? टीचर्स नम्बर वन भोग लगायेंगी ना? सभी सेन्ट्स का भोग देखेंगे। प्रवृत्ति वाले भी भोग तो लगाते हो ना कि खुद ही खा जाते हो? तो ये नहीं सोचना कि सिर्फ सेन्टर्स वालों का काम है। सभी का काम है।

» _ » तो फ़रमानबरदार का कदम प्रैक्टिकल में लाना है। अब कोई नवीनता दिखाओ। नया वर्ष तो शुरू हो गया। बापदादा को आदि का बेहद वैराग्य सदा याद आता है। उसी समय का फल आप लोग हो। अगर बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं होती तो स्थापना की वृद्धि इतनी नहीं हो सकती।

» _ » ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते हुए भी तन का हिसाब चुकतू करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। साधनों को स्व प्रति स्वीकार नहीं किया। सेवा के प्रति अलग चीज़ है। स्व प्रति स्वीकार करना और सेवा प्रति कार्य में लगाना-अन्तर तो जानते हो ना? स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो, सेवा प्रति साधन को कार्य में लगाओ। लेकिन साधन अलबेलापन नहीं लाये। तो ये फालो फादर करना ही है ना कि जो और आने हैं उनको करना है? आप लोगों को करना है। (26.01.1995)

>> स्वयं को स्नेह के साथ शक्तिशाली बनाना है।

» _ » इस जीवन का लक्ष्य ही है

→ आत्मा मे अध्यात्मिक शक्ति भरनी है।

→ स्पीचुअल पावर भरनी है

» _ » पहले जो किसी की बात डिस्टर्ब कर देती थी वो अब डिस्टर्ब न करे।

» _ » पहले जो किसी की बात हिला देती थी वो अब हिलाये नहीं।

» _ » पहले जो किसी के बोल गिरा देते थे वो अब गिराये नहीं।

» _ » किसी का व्यवहार दुखी कर देता था वो अब करे नहीं।

» _ » पहले एक तीर लगता था तो घायल

→ अब सौ तीर लगे हुए हैं फिर भी चल रहे हैं तो भी अप्रभावित

» _ » पहले खून बह रहा है पहले देखकर ही रोना आ जाता था

→ अब खून ही खून देखकर पर अप्रभावित

» _ » स्वयं को शक्तिशाली बनाना है कि कोई भी आत्मा के बोल परिस्थिति हमें भयभीत न करे इतनी शक्ति भरनी है।

➤➤ स्वयं के परिवर्तन मे शक्तिरूप बनो।

» _ » सहज योग करते अलबेलापन नहीं

→ स्वयं प्रति

→ सेवा प्रति

→ सम्बंध प्रति

» _ » स्वयं को देखो

→ एक दूसरे को काँपी नहीं करो

» _ » बस एक बाप को देखो और किसी को देखने की आवश्यकता नहीं।

→ दूसरो को देखने की आदत हो गई है

■ परंतु जिसको ये आदत हो गई है उसे ये नहीं पता कि ये भी एक आदत है।

» _ » इसलिए अपने को देखने मे अलबेलापन आ गया है।

➤➤ इस ज्ञान मार्ग मे केवल स्वयं को ही देखना है।

» _ » जिस दिन से ज्ञान मार्ग मे आए जो कमजोरी थी वो आज भी है या समाप्त हुई

» _ » कहां से यात्रा शुरू की और आज कहां तक उन्नति प्राप्त की है

» _ » पहले हृदय बहुत छोटा था अपने बारे मे सोचते थे तो क्या आज भी अपने ही बारे मे सोचते है

→ या सर्व के कल्याण का संकल्प मन मे आता है।

- »» _ »» उन्नति कितनी हुई ?? कितना शक्तिशाली बनाया?? ये चेकिंग करनी है।
 - »» _ »» नजदीक की नजर कमजोर है दूर की तेज हो गई है
 - कौन अमृतवेला उठा नहीं उठा
 - कौन क्लास में था कौन नहीं था
 - भोजन करते समय कौन बात कर रहा था
 - हम तो मौन में रहते हैं।
-

➤➤ बाबा को स्थूल में कुछ नहीं चाहिये

- »» _ »» भगवान को भोग लगा रहे हैं या भेंट दे रहे हैं पर देते समय लालच है।
 - देते समय लेने का भाव है।
 - दे तो दिया पर तुरंत मिलना चाहिए
 - »» _ »» क्योंकि बाबा ने वादा किया हुआ है कि एक दोगे तो पदम गुणा मिलेगा।
 - बाबा की सेवा करूं है तो मान प्रशंसा मिलनी चाहिए
 - »» _ »» जैसे उसे लेने का भाव नहीं है हमें किसी से कुछ नहीं लेना।
 - »» _ »» ये मन में संकल्प रखो इस संसार में जो मान शान मिल रहा है कुछ भी स्वीकार नहीं करना।
 - सारी दुनिया हमारे पीछे हम उसके पीछे।
 - अप्रभावित रहना है।
-

➤➤ स्व प्रति बेहद का वैराग

- »» _ »» स्व प्रति कठोर दूसरों के प्रति नरम
 - स्व ने कोई गलती की तो ये दंड दो
 - दस बार मुरली पढ़ना
 - दो घंटे योग ज्यादा
 - जब तक मुरली रक्त की तरह प्रवाहित न हो
- »» _ »» फालो फादर - करना ही है
 - मुझे करना है
 - मैं ही करूंगा
 - मैं करके दिखाऊंगा
 - ये दृढ़ता है जैसे उसने किया
- »» _ »» फालो फादर करना है
 - जन्म में

- बचपन में
- युवा में
- स्थापना में
- सहयोग में
- ज्ञान में
- योग में
- धारणाओं में
- सेवा में
- **हर सब्जेक्ट में**

»→ _ »→ स्वयं विघ्नविनाशक बनना व दूसरो को भी विघ्नविनाशक बनाना है।

»→ _ »→ अगर किसी सब्जेक्ट में से एक में भी कम मार्क्स हैं तो उसके हिसाब से अंतर पड़ेगा।

»→ _ »→ ये परीक्षा तो जीवन की प्रालब्ध की पूरे कल्प कल्पांतर की बाजी है
